اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝٢٥ ع

लाए और अच्छे काम किये उन के लिये वोह सवाब है जो कभी ख़त्म न होगा

اٰيَاتُهَا ٢٢ ۝ ٨٥ سُوْرَةُ الْبُرُوْجِ مَكِّيَّةٌ ٢٧ ۝ رُكُوْعُهَا ١

सूरए बुरूज मक्किय्या है, इस में बाईस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ۝١ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ۝٢ وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ ۝٣

क़सम आस्मान की जिस में बुर्ज हैं[2] और उस दिन की जिस का वा'दा है[3] और उस दिन की जो गवाह है[4] और उस दिन की जिस में ह़ाज़िर होते हैं[5]

قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ۝٤ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ۝٥ اِذْ هُمْ عَلَيْهَا

खाई वालों पर ला'नत हो[6] वोह उस भड़क्ती आग वाले जब वोह उस के कनारों पर

1 : "सूरए बुरूज" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, बाईस आयतें, एक सो नव कलिमे, चार सो पेंसठ ह़र्फ़ हैं। 2 : जिन की ता'दाद बारह है और इन में अ़जाइबे ह़िक्मते इलाही नुमूदार हैं, आफ़्ताब महताब और कवाकिब की सैर इन में मुअ़य्यन अन्दाज़े पर है जिस में इख़्तिलाफ़ नहीं होता। 3 : वोह रोज़े क़ियामत है। 4 : मुराद इस से रोज़े जुमुआ़ है जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है। 5 : आदमी और फ़िरिश्ते, मुराद इस से रोज़े अ़रफ़ा है। 6 : मरवी है कि पहले ज़माने में एक बादशाह था जब उस का जादूगर बूढ़ा हुवा तो उस ने बादशाह से कहा कि मेरे पास एक लड़का भेज जिसे मैं जादू सिखा दूं, बादशाह ने एक लड़का मुक़र्रर कर दिया, वोह जादू सीखने लगा। राह में एक राहिब रहता था उस के पास बैठने लगा और उस का कलाम उस के दिल नशीन होता गया, अब आते जाते उस ने राहिब की सोह़बत में बैठना मुक़र्रर कर लिया, एक रोज़ रास्ते में एक मुहीब जानवर मिला, लड़के ने एक पथ्थर हाथ में ले कर येह दुआ़ की, कि या रब अगर राहिब तुझे प्यारा हो तो मेरे पथ्थर से इस जानवर को हलाक कर दे, वोह जानवर उस के पथ्थर से मर गया, इस के बा'द लड़का मुस्तजाबुद्दा'वत हुवा और उस की दुआ़ से कोढ़ी और अन्धे अच्छे होने लगे। बादशाह का एक मुसाह़िब नाबीना हो गया था वोह आया लड़के ने दुआ़ की वोह अच्छा हो गया और अल्लाह तआ़ला पर ईमान ले आया और बादशाह के दरबार में पहुंचा। उस ने कहा : तुझे किस ने अच्छा किया ? कहा : मेरे रब ने। बादशाह ने कहा : मेरे सिवा और भी कोई रब है ! येह कह कर इस ने उस पर सख़्तियां शुरूअ़ कीं यहां तक कि उस ने लड़के का पता बताया, लड़के पर सख़्तियां कीं, उस ने राहिब का पता बताया, राहिब पर सख़्तियां कीं और उस से कहा अपना दीन तर्क कर। उस ने इन्कार किया तो उस के सर पर आरा रख कर चिरवा दिया, फिर मुसाहिब को भी चिरवाया दिया, फिर लड़के को हुक्म दिया कि पहाड़ की चोटी से गिरा दिया जाए। सिपाही उस को पहाड़ की चोटी पर ले गए, उस ने दुआ़ की, पहाड़ में ज़ल्ज़ला आया, सब गिर कर हलाक हो गए, लड़का सह़ीह़ सलामत चला आया। बादशाह ने कहा : सिपाही क्या हुए ? कहा : सब को ख़ुदा ने हलाक कर दिया। फिर बादशाह ने लड़के को समुन्दर में ग़र्क़ करने के लिये भेजा। लड़के ने दुआ़ की, कश्ती डूब गई, तमाम शाही आदमी डूब गए, लड़का सह़ीह़ो सलामत बादशाह के पास आ गया। बादशाह ने कहा : वोह आदमी क्या हुए ? कहा : सब को अल्लाह तआ़ला ने हलाक कर दिया और तू मुझे क़त्ल कर ही नहीं सकता जब तक वोह काम न करे जो मैं बताऊं ! कहा : वोह क्या ? लड़के ने कहा एक मैदान में सब लोगों को जम्अ़ कर और मुझे खजूर के ढुन्ड (सूखे तने) पर सूली दे, फिर मेरे तरकश से एक तीर निकाल कर "بِسْمِ اللّٰهِ رَبِّ الْغُلَامِ" कह कर मार, ऐसा करेगा तो मुझे क़त्ल कर सकेगा। बादशाह ने ऐसा ही किया, तीर लड़के की कनपट्टी पर लगा, उस ने अपना हाथ उस पर रखा और वासिल बह़क़ हो गया। येह देख कर तमाम लोग ईमान ले आए, इस से बादशाह को और ज़ियादा सदमा हुवा और उस ने एक ख़न्दक़ खुदवाई और उस में आग जलवाई और हुक्म दिया : जो दीन से न फिरे उसे इस आग में डाल दो। लोग डाले गए यहां तक कि एक औ़रत आई, उस की गोद में बच्चा था, वोह ज़रा झिजकी, बच्चे ने कहा : ऐ मां ! सब्र कर, न झिजक, तू सच्चे दीन पर है। वोह बच्चा और मां भी आग में डाल दिये गए। येह ह़दीस सह़ीह़ है, मुस्लिम ने इस की तख़रीज की, इस से औलिया की करामतें साबित होती हैं, आयत में इस वाक़िए का ज़िक्र है।

www.dawateislami.net

قُعُوْدٌ ۙ﴿۶﴾ وَّ هُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ؕ﴿۷﴾ وَ مَا نَقَمُوْا

बैठे थे[7] और वोह खुद गवाह हैं जो कुछ मुसल्मानों के साथ कर रहे थे[8] और उन्हें मुसल्मानों का

مِنْهُمْ اِلَّاۤ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۙ﴿۸﴾ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ

क्या बुरा लगा येही ना कि वोह ईमान लाए अल्लाह इज़्ज़त वाले सब ख़ूबियों सराहे पर कि उसी के लिये

السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ؕ﴿۹﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत है और अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है बेशक जिन्हों ने

فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَ

ईज़ा दी मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औरतों को[9] फिर तौबा न की[10] उन के लिये जहन्नम का अ़ज़ाब है[11] और

لَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيْقِ ؕ﴿۱۰﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ

उन के लिये आग का अ़ज़ाब[12] बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उन के लिये

جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ۬ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ؕ﴿۱۱﴾ اِنَّ بَطْشَ

बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें रवां येही बड़ी काम्याबी है बेशक तेरे रब की

رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ؕ﴿۱۲﴾ اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَ يُعِيْدُ ۚ﴿۱۳﴾ وَ هُوَ الْغَفُوْرُ

गिरिफ़्त बहुत सख़्त है[13] बेशक वोह पहले करे और फिर करे[14] और वोही है बख़्शने वाला

الْوَدُوْدُ ۙ﴿۱۴﴾ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ ۙ﴿۱۵﴾ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ؕ﴿۱۶﴾ هَلْ اَتٰىكَ

अपने नेक बन्दों पर प्यारा अ़र्श का मालिक इ़ज़्ज़त वाला हमेशा जो चाहे कर लेने वाला क्या तुम्हारे पास

حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ ۙ﴿۱۷﴾ فِرْعَوْنَ وَ ثَمُوْدَ ؕ﴿۱۸﴾ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ

लश्करों की बात आई[15] वोह लश्कर कौन फ़िरऔ़न और समूद[16] बल्कि[17] काफ़िर झुटलाने में

آیۃ حمصیۃ ۱۲

7 : कुरसियां बिछाए और मुसल्मानों को आग में डाल रहे थे 8 : शाही लोग बादशाह के पास आ कर एक दूसरे के लिये गवाही देते थे कि उन्हों ने ता'मीले हुक्म में कोताही नहीं की, ईमानदारों को आग में डाल दिया। मरवी है कि जो मोमिन आग में डाले गए अल्लाह तआ़ला ने उन के आग में पड़ने से क़ब्ल उन की रूहें क़ब्ज़ फ़रमा कर उन्हें नजात दी और आग ने ख़न्दक़ के कनारों से बाहर निकल कर कनारे पर बैठे हुए कुफ़्फ़ार को जला दिया। **फ़ाएदा :** इस वाक़िए में मोमिनीन को सब्र और अहले मक्का की ईज़ा रसानियों पर तह़म्मुल करने की तरग़ीब फ़रमाई गई। 9 : आग में जला कर 10 : और अपने कुफ़्र से बाज़ न आए 11 : आख़िरत में बदला उन के कुफ़्र का 12 : दुन्या में कि उसी आग ने उन्हें जला डाला, येह बदला है मुसल्मानों को आग में डालने का। 13 : जब वोह ज़ालिमों को अ़ज़ाब में पकड़े। 14 : या'नी पहले दुन्या में पैदा करे फिर क़ियामत में आ'माल की जज़ा देने के लिये मौत के बा'द दोबारा ज़िन्दा करे। 15 : जिन को काफ़िर, अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के मुक़ाबिल लाए। 16 : जो अपने कुफ़्र के सबब हलाक किये गए। 17 : ऐ सय्यिदे आ़लम ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم आप की उम्मत के।

تَكْذِيْبٍ ۙ﴿۱۹﴾ وَّ اللّٰهُ مِنْ وَّرَآىٕهِمْ مُّحِيْطٌ ۚ﴿۲۰﴾ بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ۙ﴿۲۱﴾

हैं[18] और **अल्लाह** उन के पीछे से उन्हें घेरे हुए है[19] बल्कि वोह कमाले शरफ़ वाला कुरआन है

فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ﴿۲۲﴾ ع

लौहे महफ़ूज़ में

اٰيَاتُهَا ۱۷ ‏| ۸۶ سُوْرَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ ۳۶ ‏| رُكُوْعُهَا ۱

सूरए तारिक़ मक्किय्या है, इस में सतरह आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह्म वाला[1]

وَ السَّمَآءِ وَ الطَّارِقِ ۙ﴿۱﴾ وَ مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ۙ﴿۲﴾ النَّجْمُ الثَّاقِبُ ۙ﴿۳﴾

आस्मान की क़सम और रात को आने वाले की[2] और कुछ तुम ने जाना वोह रात को आने वाला क्या है ख़ूब चमकता तारा

اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ؕ﴿۴﴾ فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ؕ﴿۵﴾ خُلِقَ

कोई जान नहीं जिस पर निगहबान न हो[3] तो चाहिये कि आदमी ग़ौर करे कि किस चीज़ से बनाया गया[4] जस्त

مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ۙ﴿۶﴾ يَّخْرُجُ مِنْۢ بَيْنِ الصُّلْبِ وَ التَّرَآىٕبِ ؕ﴿۷﴾ اِنَّهٗ عَلٰى

करते (उछलते हुए) पानी से[5] जो निकलता है पीठ और सीनों के बीच से[6] बेशक **अल्लाह** उस के

رَجْعِهٖ لَقَادِرٌ ؕ﴿۸﴾ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآىٕرُ ۙ﴿۹﴾ فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ وَّ لَا

वापस कर देने पर[7] क़ादिर है जिस दिन छुपी बातों की जांच होगी[8] तो आदमी के पास न कुछ ज़ोर होगा न

---

18 : आप को और कुरआने पाक को जैसा कि पहले काफ़िरों का दस्तूर था **19 :** उस से उन्हें कोई बचाने वाला नहीं। **1 :** "सूरतुत्तारिक़" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, सतरह आयतें, इक्सठ कलिमे, दो सो उन्तालीस ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी सितारे की जो रात को चमकता है। **शाने नुज़ूल :** एक शब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में अबू त़ालिब कुछ हदिय्या लाए, हुज़ूर उस को तनावुल फ़रमा रहे थे इस दरमियान में एक तारा टूटा और तमाम फ़ज़ा आग से भर गई, अबू त़ालिब घबरा कर कहने लगे : येह क्या है ? सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह सितारा है जिस से शयात़ीन मारे जाते हैं और येह कुदरते इलाही की निशानियों में से है। अबू त़ालिब को इस से तअ़ज्जुब हुवा और येह सूरत नाज़िल हुई। **3 :** उस के रब की त़रफ़ से जो उस के आ'माल की निगह्बानी करे और उस की नेकी बदी सब लिख ले। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि मुराद इस से फ़िरिश्ते हैं। **4 :** ताकि वोह जाने कि इस का पैदा करने वाला इस को बा'दे मौत जज़ा के लिये ज़िन्दा करने पर क़ादिर है, पस इस को रोज़े जज़ा के लिये अ़मल करना चाहिये। **5 :** या'नी मर्द व औ़रत के नुत़्फ़ों से जो रेह़्म में मिल कर एक हो जाते हैं। **6 :** या'नी मर्द की पुश्त से और औ़रत के सीने के मक़ाम से। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : सीने के उस मक़ाम से जहां हार पहना जाता है और इन्हीं से मन्क़ूल है कि औ़रत की दोनों छातियों के दरमियान से। येह भी कहा गया है कि मनी इन्सान के तमाम आ'ज़ा से बरआमद होती है और इस का ज़ियादा ह़िस्सा दिमाग़ से मर्द की पुश्त में आता है और औ़रत के बदन के अगले ह़िस्से की बहुत सी रगों में जो सीने के मक़ाम पर हैं नाज़िल होता है, इसी लिये इन दोनों मक़ामों का ज़िक्र ख़ुसूसिय्यत से फ़रमाया गया। **7 :** या'नी मौत के बा'द ज़िन्दगी की त़रफ़ लौटा देने पर **8 :** छुपी बातों से

www.dawateislami.net